ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION
CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 05. 05 .2020

पाठ नाम - कुटज

निबंधकार परिचय:

डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक, चिन्तक तथा शोधकर्ता हैं। द्विवेदी जी की भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है। उन्होंने भाव और विषय के अनुसार भाषा का चयनित प्रयोग किया है। द्विवेदी जी के निबंधों के विषय भारतीय संस्कृति, इतिहास, ज्योतिष, साहित्य, विविध धर्मों और संप्रदायों का विवेचन आदि है। वर्गीकरण की दृष्टि से द्विवेदी जी के निबंध दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं-विचारात्मक निबंध,आलोचनात्मक निबंध | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को 1957 में हिन्दी के क्षेत्र में अपने महान साहित्यिक योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। आलोक पर्व के नाम से प्रसिद्ध निबंध के सेट के लिए इन्हें 1973 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। इन्हें पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के द्वारा प्रोफेसर के पद के साथ ही हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रुप में सम्मानित किया गया। इन्होंने एक रेक्टर के रुप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भी कार्य किया। इन्होंने हिन्दी अकादमी लखनऊ में यूपी की अध्यक्षता की।

निबंध का सारांश

'**कुटज**' ललित निबंध है। इसका केंद्र **कुटज** नाम का वृक्ष है जो पुष्पों से भरा हुआ होता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस निबंध को उनकी आत्माभिव्यक्ति के रूप में अधिक जाना जाता है। **कुटज** के माध्यम से द्विवेदीजी बहुत से महत्वपूर्ण बिंदुओं की व्यंजना करते चलते हैं। कुटज शिवालिककी पहाड़ियों पर मिलने वाला अल्प परिचित पौधा' है |जब आप कुटज को पढ़ना शुरू करेंगे तो पहले आपको लगेगा की निबंधकार केवल कुटज के बारे में बोल रहे है या बात कर रहे है,लेकिन धीरे- धीरे आपको एहसास होगा कि कुटज तो बस एक बहाना है| वे तो मनुष्यके बारे में ,उसके जीवन, उसके संघर्षके बारे में , उसके भविष्य के बारे में बात कर रहे है| द्विवेदी जी यूँ ही उसे "गाढे का साथी" नहीं कहते | कुटजके पुष्प यक्ष के तब काम में आते है, जब उन पथरीली पहाड़ियों पर और कोई फूल का पौधा न था | निबंध के प्रारंभ में द्विवेदी जी उस स्थान के बारे में बातकरते हैजहाँ कुटज उगता है ,पनपता है,अर्थात शिवालिक श्रृंखला | कुटजमें अपराजेयजीवनी- शक्तिहै, आत्मविश्वास है, और विषम परिस्थितियों में भी शानके साथ जीने

की क्षमता है | वह समान भाव से सभी स्थितियों को स्वीकारता है| सामान्य से सामान्य वस्तु में भी अभीष्ट गुण हो सकते है , यही बताना इस निबंध का उद्देश्य है| द्विवेदी जी कुटज की विशेषताओं की चर्चा करते हुए लिखते हैकि कुटज की विशेषता है - अपराजेय जीवनी-शक्ति | "चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वासि के समान धधकती लू में यह हरा है और भरा भी, हृदुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है..... कितनी कठिन जीवनी-शक्ति है|". यह नाम और रूप दोनों में ही है | कालिदास को मेघ की अभ्यर्थना करने के लिए कुटज के ही तो फूल मिले थे | नाम के साथ रूप भी अपराजेयशक्ति के साथ मौजूद है| यह **कुटज कीजीवनी शक्ति ही है ,जो गर्म हवाओं में भी रूप को मलिन नहीं होने देती |यह जीवनी शक्ति है जो पत्थर को फोड़ कर बहुत गहराई से रस निकाल लाती है, और तमाम मुसीबतों के बीच भी जिंदा रखती है | यह सत्य कुटज के माध्यम से मनुष्य की जीवनी शक्ति की भी व्याख्या है |इसके कारण ही आनंद भी है और जीवन की प्रेरणा भी | यही कुटज की अभिव्यक्ति है | कुटज की अभिव्यक्ति को समझ कर ही हम निबंध के संदेश को समझ पाते है | लेखक सीधे मनुष्य को संबोधित कर हुए कहते है---" जीना चाहते हो कठोर पाषण को भेद कर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो"| यहीकुटज का संदेश है हमारे लिए| नाम और रूप में कुछ भी नहीं रखा है | अगर कोई चीज महत्वपूर्ण है तो वह है हम मनुष्यों की आत्मविश्वास की शक्ति |हम कठिन समय में हार जाते है या जीत जाते है,ये तो हमपर निर्भर करता है | जीवन में सुख आये या दुःख तुम भटको नहीं यही समझाना चाहते है द्विवेदी जी|** "कुटज क्याै केवल जी रहा है वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता, कोई निकट आ गया तो भय के मारे अधमरा नहीं हो जाता, नीति और धर्म का उपदेश नहीं देता फिरता, अपनी उन्निति के लिए अफसरों का जूता नहीं चाटता फिरता, दूसरों को अवमानित करने के लिए ग्रहों की खुशामद नहीं करता, आत्मोंन्नीति के हेतु नीलम नहीं धारण करता अँगूठियों की लड़ी नहीं पहनता, दाँत नहीं निपोरता, बगलें नहीं झाँकता। जीता है और शान से जीता है|"

संक्षिप्त उतरीय प्रश्न: **3x5=15**

1. निबंधकार ने कुटज को किस नाम से संबोधित किया है और क्यों ?

उ. निबंधकार ने कुटज को 'गाढ़े का साथी' कहा है|अर्थात मुसीबत में साथ देने वाला | कुटज ऐसा साथी है, जो कठिन दिनों में साथ रहा है। कालिदास ने अपनी रचना में जब रामगिरी पर्वत पर यक्ष को बादल से अनुरोध करने भेजा था , तो वहाँ कुटज का पेड़ ही विद्यमान था। उस समय में कुटज के फूल ही उसके काम आए थे। ऐसे स्थान पर जहाँ दूब तक पनप नहीं पाती है। यक्ष ने कुटज के फूल चढ़ाकर ही मेघ को प्रसन्न किया था। अतः उसे गाढ़े का साथी कहा गया है।

2. 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए।

नाम का जीवन में बहुत महत्व है। नाम है , जो मनुष्य की पहचान है। यदि हमें किसी के रूप , आकार आदि का वर्णन किया जाएगा , तो नाम नहीं होने के कारण हम उसे भली प्रकार से पहचान नहीं पाएँगे। मनुष्य को उसके चेहरे-मोहरे से पहचान भी लिया जाए लेकिन जब तक नाम याद न आए मनुष्य की पहचान अधूरी लगती है। समाज में लोग हमें इसी नाम से जानते हैं। यह समाज द्वारा स्वीकृत नाम है। अतः मनुष्य कितना सुंदर ही क्यों न यदि उसका नाम नहीं है, तो उससे पहचानने में बहुत कठिनाई होगी। नाम मनुष्य की पहचान बन गया है। गौर करें, तो हर प्राणी तथा वस्तु के लिए एक नाम दिया गया है। यह नाम इसलिए दिया गया है कि उसे पहचानना सरल हो। उसका रूप , रंग, आकार, गुण, दोष, जाति, धर्म इत्यादि के आधार पर नाम दिया जाता है। इसी पता चलता है कि नाम बहुत बड़ा है।

3.'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए।

उ.'कुटज' हम सभी को उपदेश देता है कि विकट परिस्थितियों में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। हमें धीरज रखना चाहिए और विकट परिस्थितियों में अपने परिश्रम और शक्ति से काम लेना चाहिए। यदि हम निरंतर प्रयास करते हैं , तो हम इन विकट परिस्थितियों को अपने आगे झुकने के लिए विवश कर देते हैं। विकट परिस्थितियों से गुजरने वाला व्यक्ति सोने के समान चमक कर निकलता है। जो विकट परिस्थितियों को झेल लेता है फिर उसे कोई गिरा नहीं सकता है।

4.कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

उ.कुटज के जीवन से हमें निम्नलिखित शिक्षाएँ मिलती हैं-

i. हमें हिम्मत का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

ii. जीवन कीकठिन परिस्थितियों का सामना धैर्य के साथ करना चाहिए।

iii. अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए।

iv. स्वयं पर विश्वास रखो किसी के आगे सहायता के लिए मत झुको।

v.सम्मान के साथ जिंदगी जिए |

vi.जो मिले उसे खुशी से स्वीकार कर लो।

5.निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) 'कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफ़ी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतर गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।'

उ. प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्वविवेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है। इसमें लेखक कुटज की विशेषता बताते है। दूसरी ओर वह ऐसे लोगों की और संकेत करता है, जो स्वभाव से हठी होते हैं लेकिन ये हठपन उसकी विकट परिस्थितियों से लड़ने का परिणाम होती है।

व्याख्या- लेखक इन पंक्तियों के माध्यम से कुटज तथा ऐसे लोगों के बारे में बात करता है, जो हठी या जिद्दी स्वभाव के होते हैं। लेखक कहते है कि कुटज ऐसे वातावरण में सिर उठाकर खड़ा है, जहाँ अच्छे-अच्छे व्यक्ति धराशायी हो जाते हैं। वह पहाड़ों की चट्टानों पर पनपने के साथ-साथ उनमें विद्यमान जल धाराओं से अपने लिए पानी की व्यवस्था भी कर लेता है। लोग फिर उसके इस प्रकार के खड़े रहने के स्वभाव को बेहया का उदाहरण ही क्यों न मान लें। यह स्वभाव उनकी विकट परिस्थितियों से लड़ने का परिणाम है। अतः वह उनके स्वभाव में दिखता है। ऐसे ही कुछ लोग होते हैं जीवन में विकट परिस्थितियों से गुजरते हैं और डटकर खड़े रहते हैं। उनके इस स्वभाव को लोग बेहया होने का प्रमाण मानते हैं। उनका यही स्वभाव उनकी रक्षा करता है और उन्हें मजबूती से खड़े रखने में सहायता करता है। ऐसे लोग अपना रास्ता स्वयं खोजते हैं।

शब्दार्थ:

अवधूत- सन्यासी

मिथ्याचार- झूठा आचरण

द्वंदातीत- द्वन्द से परे

अवमानित- अपमानित

मूर्धा- मस्तक

लोल- चंचल

अकुतोभय- जिसे कहीं या किसी से भय न हो

NAME-PRITI TIWARI